IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

इंदौर घराने के विकास में महिला कलाकारों का योगदान

डॉ. साक्षी शर्मा
सहायक प्रोफैसर,
सरकारी कालेज लड़कियां,
पटियाला।

सारांश

शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में गायन, वादन, तथा नृत्य के अनेक घराने बने। संगीत संरक्षण में जो अहम भूमिका इन घरानों ने बनाई वह बेहद सराहनीय है। घराने कलाकारों के व्यक्तिगत गुणों व विलक्षणताओं के कारण अपनी विशेष पहचान स्थापित करते हैं जिसका हू–ब–हू अनुसरण पीढ़ी–दर–पीढ़ी करते हुए उस घराने को आगे बढ़ाया जाता है। ग्वालियर, आगरा, लखनऊ, जयपुर, किराना आदि ख्याल के प्रमुख घराने माने जाते हैं, इन्हीं में से सबसे नीवनतम घराना हैः इन्दौर घराना। उस्ताद अमीर खां साहब के चिन्तन, सृजनशीलता तथा परिवार के सांगीतिक गुणों से विकसित यह शैली आज एक समृद्ध परम्परा का रूप धारण कर चुकी है। इस पेचीदा गायकी को न केवल पुरुष कलाकारों बल्कि अनेक प्रतिभावान महिला कलाकारों ने भी आत्मसात करने का प्रयत्न किया तथा अपनी मेहनत व सूझ–बूझ से इसे बेहद सुन्दर तरीके से अपनाया। इन्होंने न केवल इसका शिक्षण ग्रहण कर इस पर खूब चिन्तन किया बल्कि अपने परिश्रम से इस घराने की गायकी को देश–विदेश में प्रचारित किया। इन गायिकाओं ने न केवल अपने सफल मंच प्रदर्शक होने का प्रमाण दिया बल्कि आगे की पीढ़ियों के लिए आदर्श भी साबित हुईं।

भूमिका

हिन्दुस्तानी संगीत के शास्त्राधारित स्वरूप तथा आध्यात्मिक गरिमा को पुष्ट करने का श्रेय उन परम्पराओं को जाता है जो वर्षों से गुरु–शिष्य परम्परा के रूप में हमारे बीच मौजूद हैं। हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति के अंतर्गत गुरु–शिष्य परम्परा के संदर्भ में घरानों का विशेष महत्व रहा है। शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में गायन, वादन तथा नृत्य से सम्बन्धित अनेक घराने प्रचलित हैं जिन्होंने इन तीनों विधाओं के शास्त्रीय सिद्धान्तों को सजीव रखने में अहम भूमिका निभाई है।

अधिकतर घराने अपने प्रतिभाशाली संस्थापक की आवाज की प्रकृति या गायकी की विशेषताओं पर आधारित होते हैं तथा अक्सर उन्हीं के नाम या निवास स्थान पर उनका नामकरण हुआ पाया जाता है जैसे ख्याल के विभिन्न घराने दिल्ली, लखनऊ, ग्वालियर, पटियाला, आगरा तथा किराना आदि। इन सभी घरानों में इंदौर घराना एक नवीनतम घराना है। अपनी विलक्षण विशेषताओं के कारण समस्त प्रचलित घरानों में खास पहचान रखता है। इंदौर घराने का आस्तित्व में आना वास्तव में उस्ताद अमीर खाँ साहब चिंतनशील व्यक्तित्व तथा प्रयोग आधारित संगीत साधना का ही परिणाम है इसीलिए उनके जीवन काल में ही उनकी गायकी इंदौर गायकी के नाम से स्थापित हो गयी। यद्यपि कुछ लोग इस शैली को अमीरखानी शैली का नाम भी देते रहे परन्तु स्वयं खाँ साहब के कथन अनुसार ''घराना किसी व्यक्ति के नाम पर नहीं होता, यह तो स्थान के नाम पर होता है...... इंदौर में बहुत समय से अच्छे–अच्छे संगीतज्ञ रहने

आए हैं और बहुत बढ़िया गाते बजाते रहे हैं। मैंने सबको सुना और सबसे जो भी गुण अच्छा मिला, वो लिया। इस तरह से मैंने इस शैली को इंदौर घराना का नाम दिया।[1] अपनी खानदानी संगीत परम्परा के गुणों को आत्मसात करते हुए खाँ साहब ने मेरुखण्ड को अपनी गायन शैली का प्राण तत्व बनाया और इसी आधार पर रागदारी के अनेक रहस्यों को उजागर करने के नूतन मार्ग खोजे। पं. अमरनाथ जी के अनुसार ''उस्ताद अमीर खाँ साहब 2–3 घंटे तानपुरे के साथ रियाज़ कर फिर दिन भर बैठे–बैठे गाने को सोचते रहते, जिसमें मेरूखण्ड का चिन्तन बहुत हद तक शामिल था।[2]

पहले से प्रचार में रही अतिविलम्बित गायकी को सुधीर एवं सुलक्षण रूप में प्रस्तुत करके पूर्व स्थापित गायन शैलियों में विशेष पहचान दिलवाने का श्रेय खाँ साहब को ही जाता है। रुबाईदार तराने तथा खां साहब द्वारा सुररंग उपनाम से रची बंदिशें भी इंदौर घराने का दर्पण बनी जो कि इस घराने का प्रतिनिधित्व करने वाले प्रत्येक कलाकार की गायकी का अहम हिस्सा है। पंडित रवि शंकर के अनुसार ''स्वयं की सृजनशीलता ख्याल गायकी का एक अत्यधिक महत्वपूर्ण पक्ष है एवं इसकी सर्वोत्तम अभिव्यक्ति उस्ताद अमीर खाँ साहब की गायकी में दृष्टिगोचर होती है। उन्होंने अपनी व्यक्तिगत शैली बनाई और ख्याल गायकी पर अपनी छाप लगाई जिसका आज तक शीर्षस्थ गुणी गायक अनुसरण कर रहे हैं।''[3]

इंदौर घराने से प्रभावित होते हुए अनेक संगीत उपासकों ने खां साहब से प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से तालीम हासिल की जिनमें सीना–बसीना तालीम हासिल करने वाले शिष्यों में पंडित अमरनाथ, ए.टी.कानन, तेजपाल सिंह और सुरिन्द्र सिंह (सिंह बंधू), श्रीकान्त बाकरे, प्रो. अजीत सिंह पैंतल, प्रो. रविन्द्र बिष्ट, गजेन्द्र बख्शी, शंकर लाल मिश्रा, पूर्बी मुखर्जी, कंकणा बैनर्जी, मुकुन्द गोस्वामी (वीणा वादक), मुनीर खाँ (सारंगी वादक), प्रद्युम्न मुखर्जी, सुल्तान खां (सारंगी वादक), हृदयनाथ मंगेशकर, शंकर मजूमदार, सुरेन्द्र शंकर अवस्थी, भीमसेन शर्मा, प्रेम प्रकाश जौहरी, टॉम रॉस (अमरीका) , अमरजीत कौर, डी.पी.टोके तथा कमलबंधोपाध्याय के नाम विशेष रूप से वर्णन योग्य हैं। इस सूची में अन्य घरानों से सम्बंधित ऐसे बहुत से कलाकारों के नाम भी शुमार हैं जो न सिर्फ इंदौर घराने की विशेषताओं से प्रभावित हुए बल्कि उन्होंने इस विशेषताओं को अपनी गायन शैली में भी आत्मसात किया जैसे स्वामी गोकुलोत्सव जी महाराज, पंडित भीमसेन जोशी, विदुशी डॉ. प्रभा अत्रे तथा उस्ताद राशिद खाँ इत्यादि।

यह गायन शैली आज एक समृद्ध परम्परा का रूप धारण चुकी है। इंदौर घराने के उपरोक्त वर्णित अनुयायियों सहित बहुत सी महिला गायिकाओं ने भी इस विलक्षण गायकी को अपनी सूझ बूझ तथा परिश्रम से आत्मसात किया तथा देश विदेश में इसका प्रचार किया। इस घराने की गायकी को प्रफुल्लित करने में जिन गायिकाओं का विशेष योगदान रहा है उनका वर्णन इस प्रकार है–

श्रीमती पूर्बी मुखर्जी

उस्ताद अमीर खाँ साहब के प्रमुख शिष्यों में से एक श्रीमती पूर्बी मुखर्जी, खां साहब के ही शिष्य प्रद्युम्न मुखर्जी की पत्नी तथा मशहूर सितार वादक निखिल बैनर्जी की चचेरी बहन थी। इनकी निष्ठा तथा प्रतिभा को देखते हुए खां साहब ने इन्हें अपनी शिष्या के रूप में स्वीकार किया। पूर्बी मुखर्जी ने खां साहब की शैली का हू–ब–हू अनुसरण करते हुए अपने गुरु को सदैव गौरवान्वित किया। आकाशवाणी तथा दूरदर्शन की प्रमाणित कलाकार श्रीमती पूर्बी मुखर्जी ने अपने घराने की परम्परा के अनुसार ही झूमरा ताल में अति विलम्बित लय आधारित ख्याल गायकी पर बल दिया। आपने देश भर में आयोजित हाने वाले प्रतिष्ठित संगीत सम्मेलनों में सफल कला प्रदर्शनों के माध्यम से इंदौर घराने का प्रचार किया। सन् 1987 के अमीर खाँ स्मृति समारोह, इंदौर में प्रस्तुत आपका गायन प्रस्तुत हो चुका है। खां साहब के जीवन के अंतिम क्षणों तक इन्हें उनकी सोहबत में रहकर सीखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। पं. तेजपाल सिंह जी अनुसार 13 जनवरी 1971 को खां साहब के आकस्मिक निधन के दिन भी आप उनके साथ ही थीं।

पूर्बी जी अपने जीवन के अन्तिम समय तक यही कहती रहीं कि विधाता ने उस मोटर दुर्घटना में मुझे ही टकरा दिया होता, खां साहब के स्थान पर मौत मुझे आ जाती।[5]

श्रीमती कंकना बैनर्जी

विदुषी कंकना बैनर्जी का जन्म 19 अप्रैल, 1950 को कलकत्ता में हुआ। इनका परिवार एक व्यापारी वर्ग से संबंधित था परन्तु इनकी माता मंदिरा देवी को संगीत से लगाव बहुत था अतः 4 साल की आयु से इनकी सांगीतिक तालीम अपनी माता जी से प्रारम्भ हो गयी। आप स्कूल से आते ही रियाज़ के लिए बैठ जाती और यह सिलसिला कई सालों तक यूं ही चलता रहा। आपके मामा प्रद्युम्न मुखर्जी, कलकत्ता रेडियो के स्टेशन निर्देशक थे। वे तथा उनकी पत्नी पूर्बी मुखर्जी दोनों ही उस्ताद अमीर खाँ साहब से संगीत सीखते थे। आप केवल 10–11 साल की जब खाँ साहब से पहली मुलाकात हुई। आपने खां साहब के कहने पर राग मालकौंस और बागेश्री सुनाया। उन्हें आपकी आवाज़ पसन्द आई और गंडाबंधन की रस्म अदा की गई। 14 वर्ष की आयु में आपने खां साहब के साथ मंच प्रस्तुति दी और राग पूरिया धनाश्री गाया। आपके द्वारा बड़े ही स्नेह से इन सभी पलों का बयान किया गया।[6] 17 साल की उम्र में कंकना बैनर्जी की शादी खां साहब के ही शार्गिद सुनील बैनर्जी के साथ हो गई और लखनऊ आ गयीं, लेकिन कुछ ही समय पश्चात आपके पति का स्वर्गवास होने पर आप अपने पुत्र और पुत्री को लेकर वापिस कलकत्ता आ गयीं। आप इन प्रतिकूल परिस्थितियों में भी संगीत के क्षेत्र में आगे बढ़ती रहीं। रेडियो से आपके गायन कार्यक्रम लगातार प्रसारित होने लगे। इस समय के पश्चात आपने अपना निवास मुम्बई को चुना तथा यहाँ आकर आपने **राम तेरी गंगा मैली** तथा **ईद मुबारक** जैसी फिल्मों में पार्श्वगायन भी किया। आप **स्वामी हरिदास संगीत सम्मेलन, भातखण्डे संगीत महोत्सव, संकट मोचन समारोह, आई.टी.सी. संगीत सभा, आई.सी.सी. आर.** समारोह जैसे प्रतिष्ठित संगीत सम्मेलनों आदि में अपना गायन प्रस्तुत कर चुकी हैं। **सुरमणि, कला सरस्वती** तथा **द किराना घराना** अवार्ड आदि उपाधियों से सम्मानित कंकना बैनर्जी आज न केवल हिन्दुस्तान बल्कि विदेशी छात्रों को भी इंदौर घराने की तालीम दे रही हैं।

श्रीमती शान्ति शर्मा

उस्ताद अमीर खाँ साहब की गायकी को आत्मसात करने वाली गायिकाओं में शान्ति शर्मा का नाम अपना विशेष स्थान रखता है। शान्ति शर्मा का जन्म तन्जावुर (तामिलनाडू) में हुआ। आपके पिता फौज में थे, परिणामस्वरूप आपको हैदराबाद, पूना, तन्जावुर इत्यादि कई स्थानों पर रहने का मौका मिला। बचपन से ही आपके घर संगीत का माहौल था। आपका सम्पूर्ण परिवार और विशेषकर आपकी माता जी कर्नाटक संगीत से जुड़े थे। इस प्रकार घर के सांगीतिक वातावरण में आपने भी कर्नाटक संगीत सीखना शुरू किया परन्तु आपकी आवाज के गुण धर्म के अनुसार सभी को ऐसा प्रतीत हुआ कि आपका कंठ हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के लिए अधिक उपयुक्त है। इस बात को ध्यान में रखते हुए 13 साल की आयु में संगमेश्वर गुडूर जी से आपकी हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की तालीम शुरू करवाई गई। श्री संगमेश्वर गुडूर पंचाक्षरी बुबा के शार्गिद थे जिन्होंने अब्दुल करीम खां व सवाई गन्धर्व जैसे दिग्गज कलाकारों से तालीम हासिल की थी। तालीम के प्रारम्भिक चरण में आपको यमन, भैरव, बैरागी, पूरिया तथा शुद्ध कल्याण जैसे रागों का ज्ञान दिया गया। आपके गुरू आपको विभिन्न संगीत सम्मेलनों में अपने साथ ले जाते जिसके कारण छोटी उम्र में ही आपको विख्यात कलाकारों को सुनने का मौका मिलता रहा। वहीं पहली बार आपने उस्ताद अमीर खां साहब को सुना तथा मन ही मन सोच लिया कि मुझे इसी शैली का ही अनुसरण करना है परन्तु कुछ ही समय बाद खां साहब की आकस्मिक मृत्यु होने के कारण आप का अरमान दिल में ही रह गया। किस्मत ने आपको सुनहरा मौका दिया और वर्ष 1977 में दिल्ली के स्प्रू हाऊस में अमीर खां साहब की बरसी के अवसर पर आपने पंडित अमरनाथ जी का गायन सुना। हू–ब–हू खां साहिब का गाना पंडित जी के गले से सुनकर आपने उन्हीं से सीखने की ठान ली। आपके आग्रह करने पर पंडित जी ने आपको पढ़ाई पूरी करके आने को कहा और 1978 में स्कूली शिक्षा पूर्ण करने के

बाद आपने पंडित जी से सांगीतिक तालीम लेनी प्रारम्भ कर दी और इस प्रकार पंडित अमरनाथ जी के माध्यम से आपका इंदौर घराने की गायकी सीखने का सपना पूरा हुआ। आपने 1996 तक इस घराने की तालीम ली। जिन दिनों पंडित अमरनाथ जी भारतीय कला केन्द्र में संगीत शिक्षण का काय्र करते थे तब नए विद्यार्थियों की तालीम का ज़िम्मा आपको सौंपा गया था। आप अक्सर कहती कि पंडित जी की बढ़त का तरीका, सरगमों के बल पेच बेहद अद्भुत थे। उन्होंने कर्नाटक रागों को लेकर अपनी अनेक बंदिशों भी बनाई। सच में एक अलग ही रंग था उनकी तालीम का।[7]

पंडित अमरनाथ जी की मृत्यु के पश्चात आपको आई.टी.सी. संगीत रिसर्च अकादमी की तरफ से फैलोशिप भी मिली। आपने न सिर्फ अपनी मधुर गायकी से इंदौर घराने को बुलंदियों तक पहुंचाया बल्कि आगामी पीढ़ी को भी इस गायकी से अवगत करवाते हुए अपने शिष्य धर्म का निर्वाह किया। दुर्भाग्य से आज भले ही आप हमारे बीच नहीं हैं परन्तु पंडित अमरनाथ जी के वरिष्ठ शिष्यों में आपका नाम बेहद सम्मान से लिया जाता है। इंदौर परम्परा की नवोदित पीढ़ी के लिए आप सदैव एक आदर्श रहेंगी।

श्रीमती बिंदु चावला

उस्ताद अमीर खां साहब के परम शिष्य पंडित अमरनाथ जी की सुपुत्री तथा शिष्या श्रीमती बिंदु चावला को इंदौर घराने की तालीम विरासत के रूप में अपने पिता जी से प्राप्त हुई। अपनी सांगीतिक यात्रा की जानकारी देते हुए आप बताती हैं, ''मैं बहुत छोटी थी, तब से सुबह उठते ही पिता जी का रियाज़ सुनती थी। यह बहुत खूबसूरत और सुरीला समय था क्योंकि उनके रियाज़ के साथ ही मेरा दिन शुरू होता था। हम इंदौर घराने से संबंधित हैं, बेहद चैनदारी और सूफी मिज़ाज वाला घराना। इस घराने के ख्याल मुझे लोरियों की तरह लगते थे जब मैं छोटी थी। उस्ताद अमीर खां साहब की गायकी गूढ़ शोध का परिणाम थी, उसी प्रकार में इस गाने पर अनुसंधान करती रही और बहुत कुछ लिखा। जब इंदौर घराने के ख्याल पिता जी के रियाज़ के रूप में सुनते सुनते मेरी रूह में समाने लगे तो मुझे महसूस हुआ कि यह शहद है जो मेरे कानों में घूलता जा रहा है। हमारे घराने में संगीत को इतना सोचा गया, इतना शोध किया गया कि उस पर मेरे चिन्तन द्वारा लिखी किताबों और पत्र पत्रिकाओं को भी बहुत दाद मिली। मैं लिखने और गाने में कोई अंतर नहीं समझती। पिता जी मुझे अक्सर कहते, 'ऐसा कोई गाना मत लिखना जिसको गा कर तुम्हें प्रमाण न मिले। तुम्हारा लेखन भी गाने की तरह होना चाहिए जिस तरह राग बहता है, उसी तरह लेखन भी बहना चाहिए, एक धारा की तरह। मैंने मेरे पिता की मृत्यु के पश्चात किसी भी अन्य गुरू से तालीम ग्रहण नहीं की।[8]

बिंदु चावला ने एक अनुसंधानकर्ता के रूप में अनेक पुस्तकें तथा लेख लिखे। इनके शोध कार्य हिन्दुस्तानी संगीत में संगीतमय विचार के लिए इन्हें **द टाइम्स ऑफ इंडिया फैलोशिप अवार्ड** से सम्मानित किया गया। एक प्रिंसीपल रिसोर्स पर्सन के रूप में इन्होंने द इंदौर घराना नामक एक प्रोजेक्ट पर भी कार्य किया। पंडित अमरनाथ मैमोरियल फाऊंडेशन के अध्यक्ष के पर पर रहते हुए आपने अपने पिता द्वारा आप के साथ सांझा किये गए संस्मरणों पर आधारित पुस्तक **इंदौर के मसीहा** को हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में अनुवादित करके वर्ष 2008 में प्रकाशित किया। आपने **The Conversation with Pandit Amarnath** पुस्तक भी प्रकाशिक करवाई। वर्ष 1997 से आपने अपने पिता पंडित अमरनाथ जी की पहली बरसी के अवसर पर मितुरंग संगीतोत्सव नाम से एक वार्षिक श्रद्धांजलि समारोह का आयोजन करवाना शुरू किया। वर्ष 2011 में आप के द्वारा संसद भवन दिल्ली में आयोजित पंडित अमरनाथ जी के जन्म दिवस को समर्पित कार्यक्रम में आमंत्रित कलाकारों को पंडित अमरनाथ वाग्गेयकार सम्मान तथा पंडित अमरनाथ कम्पोज़र पुरस्कार भेंट किए गए। मार्च 2011 से आप **सुर सप्तक** नामक एक साप्ताहिक सांगीतिक टेलिविजन प्रोग्राम की प्रस्तुतकर्ता भी रही। अपने अन्तिम समय तक आप अपने पिता के घर में ही रहकर शिष्यों को तालीम देने के साथ–साथ **पंडित अमरनाथ मैमोरियल फांउडेशन** की अध्यक्षता भी करती रहीं।

कुछ समय बीमार रहने का उपरानत 24 जुलाई 2017 को आपकी मृत्यु हो गई। इंदौर घराने के प्रति आपके प्रशंसनीय योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता।

श्रीमती पीऊ सरखेल

श्रीमती पीऊ सरखेल का जन्म वर्ष 1965 में कलकत्ता में हुआ। आपके पिता श्री कमल बंधोपध्याय ने उस्ताद अमीर खां साहब से 21 साल तक खां साहब से तालीम हासिल की। आपके अनुसार उस्ताद अमीर खां साहब जब भी कलकत्ता आते, हमारे घर अवश्य ठहरते। जब खां साहब पिता जी को तालीम दे रहे होते, मैं बहुत ध्यान से उन्हें सुनती। इस प्रकार बहुत छोटी उम्र से अपने घर में ही खां साहब का रियाज सुनने को मिला जबकि गायन की प्रारंभिक विधिवत शिक्षा पिता जी से ग्रहण की।[9] इंदौर शैली को सीखती हुई आप बड़ी हुईं तथा 18 साल की आयु में आपने पहली सफल मंच प्रस्तुति दी। विवाहोपरांत आप राजकोट आ गयी और आकाशवाणी के प्रमाणिक कलाकार के रूप में रेडियो से लगातार आपका गायन प्रसारित होने लगा।

35 वर्ष की आयु में आपने निरन्तरता से सांगीतिक कार्यक्रमों में गायन प्रस्तुत करना प्रारम्भ किया। राजकोट की एक विख्यात संगीत अकादमी में आप प्रधानाचार्य के रूप में भी कार्यरत रहीं। आप नई दिल्ली के आई.सी.सी.आर. पैनल की सदस्या भी हैं। आपकी प्रभावशाली आवाज़, तीनों सप्तकों पर नियन्त्रण, सरगम का विचित्र प्रयोग इत्यादि विशेषताएं आपकी गायकी में चार चांद लगाते हैं। आपने वर्ष 2005, 2006 तथा 2009 में यू.के. के बाई एशियाई म्यूजिक सर्किट में अपना गायन प्रस्तुत किया। आपने **लंदन के नेहरू सेंटर, बर्लिन के टैगोर सैंटर, यू.के. के कल्चरल विंग ऑफ द हाई कमिशन** तथा **जर्मनी की इंडियन एम्बेसी** में भारतीय शास्त्रीय संगीत का गौरव बढ़ाया। आपने विभिन्न नामवर संगीत सम्मेलनों जैसे **स्वर्ण संगीत समारोह (संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली), तानसेन संगीत समारोह (ग्वालिया), सवाई गांधर्व संगीत समारोह (पुणे), उस्ताद अमीर खां संगीत समारोह (इंदौर), उस्ताद अलाउद्दीन खां संगीत समारोह (मेहर), श्री बाबा हरिवल्लभ संगीत सम्मेलन (जालंधर), स्वामी हरिदास संगीत सम्मेलन (मुम्बई), तथा चण्डीगढ़ म्यूजिक फेस्टिवल (चण्डीगढ़)** आदि में इंदौर घराने के नाम को गौरवान्वित किया। आपकी असाधारण प्रतिभा तथ संगीत के क्षेत्र में सराहनीय योगदान को देखते हुए आपको **'सुरमणि', सीख शक्ति, प्रियदर्शिनी, त्रिवेणी, गौरव पुरस्कार** तथा **गुजरात गौरव** पुरस्कार आदि से नवाजा गया। वर्तमान समय में आप **'नादस्वरम'** नामक फाउंडेशन की अध्यक्षा के रूप में नवोदित पीढ़ी को इंदौर घराने की तालीम देने के साथ–साथ प्रस्तुतिकरण हेतु मंच उपलब्ध करवा रही हैं। इस प्रकार आप अपने सतत प्रयासों द्वारा इंदौर घराने की परम्परा से ग्रहण किए संस्कारों को दुनिया भर में पहुंचा रही हैं।

श्रीमती रमणीक सिंह

श्रीमती रमणीक सिंह का जन्म 10 फरवरी 1971 में, नई दिल्ली में पिता स्वर्गीय उज्जल सिंह तथ माता इंदर खुराना के घर हुआ। बाल्यावस्था से ही आपकी शास्त्रीय संगीत में रूचि थी। आपने संगीत की प्रारम्भिक तालीम आपने श्रीमती अमरजीत कौर से पास की जो कि पंडित अमरनाथ जी की शिष्या थी। 1988 में अपनी स्कूली शिक्षा पूर्ण करने के उपरांत आपने भातखण्डे संगीत विद्यापीठ, नई दिल्ली से संगीत विशारद की डिग्री हासिल की। संगीत का कुछ मार्गदर्शन आपको पंडित भीमसेन जोशी से भी प्राप्त हुआ। वर्तमान समय में आप इंदौर घराने के ही पंडित बलदेव राज वर्मा जी से संगीत सीख रही हैं। विवाह उपरानत आप कैनेडा रहने लगी, जहां रहते आपने इंदौर घराने का खूब प्रचार किया। आप कैनेडा में टेलीविजन की नियमित गेय कलाकार हैं तथा कई टेलीविजन धारावाहिकों के टाईटल गीत भी स्वरबद्ध कर चुकी हैं। शब्द कीर्तन में रूचि रखने के साथ–साथ आप ठुमरी गायन में भी प्रवीणता रखती हैं। आपके अनुसार, ''मैं अपने आपको बेहद भाग्यशाली मानती हूँ जो मुझे बचपन से अब तक इस घराने के बहुत ही गुणी

व अनुभवी कलाकारों से सीखने का मौका मिला तथा आज भी मेरी तालीम जारी है। इसी तालीम को मैं ज्यों–त्यों आगे ले जाने के लिए प्रयत्नशील भी हूं।'[10]

आपको देश–विदेश के विख्यात संगीत सम्मेलनों में अपना गायन प्रस्तुत करने का सौभाग्य प्राप्त है जिनमें से **'त्रिवेणी कला संगम (टोरंटो), यूनिवर्सिटी ऑफ रोड आइलैंड (यू.एस.), पैनोरमा इंडिया (टोरंटो), आई.आई.सी (इंडो केनेडियन कल्वर स्प्रिंग फेसट (हैमिल्टन), आर्य समाज मंदिर (नई दिल्ली), गांधर्व महाविद्यालय (पुणे), श्री बाबा हरिवल्लभ संगीत सम्मेलन (जालंधर), सप्तक स्कूल ऑफ म्यूजिक (अहमदाबाद), कला प्रकाश (बनारस), हेबीटेट सेंटर (नई दिल्ली), प्रभा अत्रे फाउंडेशन (पुणे), भवानीपुर संगीत सम्मेलन (पश्चिमी बंगाल), शान्ति संगीत सम्मेलन (पश्चिमी बंगाल), चिन्मय वेदान्ता हेरिटेज सेंटर (टोरंटो), पंजाब कला भवन (चण्डीगढ़), तानसेन संगीत समारोह (ग्वालियर) तथा राग अमीर संगीत समारोह (इंदौर)** आदि के नाम विशेष रूप से वर्णन योग्य हैं।

वर्तमान समय में आप उस्ताद अमीर खां साहब के उपनाम पर आधारित **सुररंग स्कूल ऑफ म्यूज़िक** चला रही हैं जिसमें आधुनिक पीढ़ी को इंदौर घराने की विधिवत तालीम दी जा रही है।

निष्कर्षः–

उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट है कि उस्ताद अमीर खां साहब के देहांत से लेकर अब तक इंदौर घराना, हिन्दुस्तानी ख्याल गायन के मूल घरानों में स्थान ग्रहण कर अपनी विशेष पहचान बना चुका है। पुरुष कलाकारों के साथ–साथ महिला कलाकार भी इस घराने के देश विदेश में प्रचार–प्रसार हेतु दृढ़, समर्पित व पुरजोश होकर प्रयासरत हैं। यह कलाकार अपने उत्कृष्ट कला प्रदर्शनों के साथ–साथ एक उम्दा शिष्य परम्परा का नेतृत्व भी कर रहे हैं। इस प्रकार दिखावे की चकाचौंध से मुक्त उस्ताद अमीर खां साहब द्वारा स्थापित इंदौर घराना अपनी गरिमा के साथ चौथी से पांचवी पीढ़ी में भी प्रविष्ट हो चुका है।

वर्तमान पीढ़ी में रचिता अरोड़ा, प्रांजिति बख्शी, निधि अरोड़ा, अंजली मराठे, अरुणिमा, डॉ. अंशिवरा सक्सेना, गरिमा, सोनिया शर्मा, डॉ. ज्योति शर्मा, श्वेता काले, नवदीप कौर देहल, गार्गी वोहरा, देवांग्शी बयास भट्ट, ध्वनि व्यासांजी, कल्पना मार्डिया, शास्वती भट्टाचार्य, अन्तरा पटेल, वर्षा व्यंकट, मृणालिनी दास, पल्लवी दास आदि महिला कालनेत्रियाँ इस शैली को आत्मसात करते हुए उन्नति के पथ पर अग्रसर हैं।

सन्दर्भ सूची

1. संगीत के दैदीप्यमान सूर्यः उस्ताद अमीर खां, पं. तेजपाल सिंह (सिंह बंधु डॉ. प्रेरणा अरोड़ा, पृ. 66)
2. इंदौर के मसीहाः पंडित उमरनाथ जी द्वारा अमीर खां साहब के संसमरण, बिंदु चावला, पृ. 163
3. भारतीय संगीतकार उस्ताद अमीर खां, डॉ इब्राहीम अली, पृ. 133
4. वही, पृ. 223
5. पं. तेजपाल सिंह जी से की गयी निजी मुलाकात से प्राप्त जानकारी अनुसार दिल्ली, 4 नवंबर 2017
6. श्रीमती कंकणा बैनर्जी से हुई दूरभाषिक वार्तालाप से प्राप्त जानकारी अनुसार, 3 दिसंबर, 2018
7. डॉ. यशपाल शर्मा जी द्वारा निजी मुलाकात में प्रगट किये गए विचार, पटियाला, 12 मई, 2018
8. https://youtube/PH
9. श्रीमती पीऊ सरखेल द्वारा दूरभाषिक वार्तालाप में प्रगटाये विचार, 14 मार्च 2018
10. श्रीमती रमणीक कौर से की गई निजी मुलाकात से प्राप्त जानकारी अनुसार, लुधियाना, 27 फरवरी, 2019